ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

मीडिया और सिनेमा

भारतीय बहुसंस्कृतिवाद और मीडिया

(Indian Multiculturalism and Media)

डॉ. सुरेश कानडे

एसोसिएट प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
एस. एम. आर. के-बी. के-ए. के.
महिला महाविद्यालय नाशिक, महाराष्ट्र (भारत)
sfkanade@gmail.com

प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय समाज और संस्कृति का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। प्राचीनता के साथ-साथ इसमें निरंतर परिवर्तन होते रहे है और होते रहेंगे। इसके परिणामस्वरूप समाज और संस्कृति में भी सदैव परिवर्तन हुए हैं। यही कारण है कि आधुनिक भारतीय समाज और प्राचीन भारतीय समाज पूरी तरह से भिन्न है। विश्व में भारत एक ऐसा देश है जहाँ अनेक प्रकार की विविधताएँ पायी जाती हैं। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत, उत्तर से दक्षिण 3214 कि.मी. और पूर्व से पश्चिम 2933 कि.मी. (लगभग) तक फैला है। जिसमें किसी क्षेत्र की जलवायु ठंडी तो किसी क्षेत्र में गर्म है, कहीं पहाड़ियाँ हैं तो कहीं रेगिस्तान हैं। इतना ही नहीं प्रजातीय दृष्टि से भी भारत विभिन्न प्रजातियों का अजायब घर है। भाषा की दृष्टि से भी भारत बहुभाषी देश है। भारत में लगभग 179 भाषाएँ तथा 544 स्थानीय बोलियाँ प्रचलित हैं। विभिन्न धर्मों के अनुयायी यहाँ विद्यमान हैं। वैदिक धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, इस्लाम धर्म, इसाई धर्म, पारसी धर्म आदि अनेक धर्मों के लोग यहाँ रहते हैं। इतना ही नहीं बल्कि विभिन्न धर्म भी छोटे-छोटे सम्प्रदायों में विभाजित हैं। एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय से अपने आपको अलग या ऊँचा-नीचा समझते हैं।

भारत की इस विविधता के परिणाम स्वरूप भौगोलिक, धार्मिक, भाषाई तथा प्रजातीय विविधता के कारण भारतीय संस्कृति में भी विविधता विद्यमान है। विभिन्न क्षेत्रों के लोगों में अलग-अलग रीती-रिवाज, जाति-पात, खान-पान, उत्सव-त्यौहार, प्रदर्शन कला, वास्तुकला, स्थापत्य कला, मूर्तिकला, नृत्यकला, साहित्य, संगीत, एवं सर्व ललित कलाएँ (नाटक आदि) विद्यमान हैं। कहने का आशय यह है कि भौतिक और सांस्कृतिक परिवेश की भिन्नता के कारण भारतीय जन समूह अनेक छोटी-छोटी इकाईयों में विभाजित है। प्रत्येक मानवीय समूह की अपनी धार्मिक मान्यताएं हैं, प्रथाएं परम्पराएं हैं, रीती-रिवाज एवं

रूढ़ियाँ हैं। प्रत्येक मानवीय समूह की अपनी विलक्षण विशेषताएं हैं। इस प्रकार भारत की सांस्कृतिक विविधता और सभ्यता राष्ट्रीय प्रगति की दृष्टि से विभिन्न संस्कृतियों के मध्य एकता का होना ही 'बहुसंस्कृतिवाद' है।

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। आज विज्ञान, मानवीय समाज का अभिन्न अंग बन गया है जो मानवीय जीवन को सभी क्षेत्रों में प्रभावित कर रहा है। आज हमारे रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, रिती-रिवाज, तीज-त्यौहार, आदि सभी विज्ञान से प्रभावित हैं। विज्ञान के विकास से दुनिया की दूरियाँ घट गयी हैं। सारी दुनिया एक विश्व ग्राम में बदल गयी है। इस बदलाव में मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। विज्ञान के विकास की पहुँच जमीन से लेकर आसमान तक ही नहीं समुद्र और अंतरीक्ष तक हो गयी है। इतना ही नहीं सौर मंडल के ग्रहों पर भी कब्जे का प्रयास जारी है। कृषि, उद्योग, यातायात, चिकित्सा, तथा संचार के क्षेत्र में विज्ञान ने नई ऊँचाईयां प्राप्त की है। इस वैज्ञानिक शोध, विकास तथा उपलब्धियों को दुनिया के विभिन्न देशों तथा समाज के ज्ञान-विज्ञान एवं संकृति को प्रचारित-प्रसारित करने का महत्वपूर्ण कार्य मीडिया ने किया है। यह किसी भी देश की उन्नति से आंका जा सकता है। भारतीय संकृति अपने मूल्यों और विशेषताओं के कारण चर्चित रही है परन्तु आज बहुसांस्कृतिकवाद के कारण इसमें निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं। इस परिवर्तन का मुख्य कारण मीडिया का प्रभाव है। यह प्रिंट मीडिया भी हो सकता है और इलोक्ट्रोनिक मीडिया भी हो सकता है। मीडिया के माध्यम से आज जहाँ ज्ञान विज्ञान की जानकारी दी जा रही है वहीं बहुसंस्कृतियों की जानकारियाँ भी दी जा रही हैं। भूमंडलीकरण एवं उपभोक्तावाद के कारण मीडिया ऐसी संस्कृति परोस रहा है जो पूरे विश्व को प्रभावित कर रहा है। जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों का निरंतर पतन हो रहा है तथा एक कृत्रिम संस्कृति का उगम हो रहा है। जिसमें मानवीय संवेदनाएं नष्ट होती नजर आ रही है।

अत: यह कहा जा सकता है कि, भारत की विविध संस्कृतियाँ प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति कर्म प्रधान संस्कृति है। इतना ही नहीं इसे मोहनजोदड़ो और मेसोपोटोमिया की सभ्यता के समकालीन माना जाता है। भारतीय संस्कृति ने अनादि काल से क्रूर आक्रमणों को झेला है फिर भी आज तक जीवित है। इतना ही नहीं इसने पूरे विश्व पर अपनी छाप आज भी विद्यमान रखी है जबकि मीडिया क्रान्ति से विश्व की सृष्टि और सांस्कृतिक विरासत कुछ हद तक खतरे में है। मीडिया को अपने प्रयोग में परिवर्तन लाने होंगे, उसे अपने रास्ते और रुख बदलने होंगे, नजरिये और नई नजर पैदा करनी होगी। उसे जन संस्कृति अथवा बहुसंस्कृतियों की शक्तियों से जुड़ना होगा। मीडिया को सत्याग्रही

और मानवतावादी संस्कृति का पोषक बनना पड़ेगा तभी मीडिया बहुसंस्कृतिवाद या विश्व संस्कृति का रक्षक और संरक्षक बन सकेगा।

भारतीय समाज और संस्कृति का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। प्राचीनता के साथ-साथ इसमें निरंतर परिवर्तन आये हैं। समाज और संस्कृति में सदैव परिवर्तन होते रहे हैं और होते रहेंगे। यही कारण है कि भारतीय समाज प्राचीन भारतीय समाज से भिन्न है। समकालीन परिवर्तन भारतीय समाज के लिए एक महत्व पूर्ण घटना है। भारतीय समाज के अंदर जितने परिवर्तन विगत अनेक शताब्दियों में हुए हैं उससे कहीं अधिक व्यापक परिवर्तन स्वाधीनता के बाद हुए हैं। प्राचीन विश्वास तथा परम्पराओं के स्थान पर नये विश्वास तथा परम्पराओं का विकास हो रहा है। जन्म पर आधारित संस्तरण समाप्त हो रहा है। इसका स्थान स्तरीकरण की प्रणाली ले रही है। जातीय निर्योग्यताएं धीरे-धीरे समाप्त हो रही हैं और उनके स्थान पर वर्ग व्यवस्था का विकास हो रहा है। संयुक्त परिवारों के स्थान पर आधुनिक केन्द्रीय या एकाकी परिवारों का निर्माण हो रहा है। सामजिक सम्बन्ध जो कभी अभौतिक संस्कृति द्वारा संचलित होते थे अब धीरे-धीरे टूट रहे हैं। भौतिक संस्कृति का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। विज्ञान की प्रगति से विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में निवास करने वाले समुदाय एक दूसरे के निकट आ गये हैं। सामुदायिक संगठनों के स्थान पर राष्ट्रीय संगठनों का विकास हो रहा है। सामुदायिक हितों के स्थान पर राष्ट्रीय हित की भावना का विकास हो रहा है। वैज्ञानिक उपलब्धियों के फलस्वरूप सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन बहुसंस्कृतिवाद का स्वरूप धारण करने लगा है। उपरोक्त सभी परिवर्तन की गति में तीव्रता लाने का कार्य मीडिया ने किया है।

भूमण्डलीकरण एवं उदारीकरण के इस युग में समाज में विविध संस्कृतियों की अस्मिता का प्रश्न भी अधिक प्रखर होते नजर आता है। विविध समाज अपनी संस्कृति बनाये रखने के साथ-साथ अन्य संस्कृतियों को भी अपनाने लगे हैं। इसलिए भी कभी-कभी संस्कृतियों के अस्मिता का प्रश्न अधिक व्यापक होने लगे हैं। सामाजिक स्थलांतरण के कारण यह सब होता नजर आता है। इस सन्दर्भ में मशहूर फिल्म अभिनेता राजकपूर जी पर फिल्माया गया गीत -"मेरा जूता है जापानी, ये पतलून इन्लिश्स्तानी, सर पर लाल टोपी रुसी, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी" जो 1955 में गाया गया था वह आज के भूमण्डलीकरण के स्वरूप को एवं बहुसंस्कृतिवाद को दर्शाता है। इतना ही नहीं 65 वर्ष बाद भी भूमण्डलीकरण एवं उदारीकरण के जड़ों को दर्शाता है। परदेशी वस्तुओं एवं वित्त को खुले दिल से स्वीकार करने वाला जागतिक समाज स्वयं की स्वदेशी सांस्कृतिक अस्मिता का जतन करने का भी प्रयत्न कर रहा है। अपना गाँव, अपना वतन छोड़कर स्थलांतरित होने वाले समाज की स्थिति इसी प्रकार की है।

केवल परकीय वस्तु ही नहीं बल्कि भूमि, कायदा, रीती-रिवाज भी अपनाने लगते हैं। फिर भी अपनी संस्कृति और अस्मिता का जतन करने का निरंतर प्रयत्न करते हैं। ऐसी परिस्थिति दुनिया के सभी बड़े शहरों में देखने व सुनने को मिलती है। इस प्रकार के समाज को 'यजमान समाज'(होस्ट सोसायटीज) कहना उचित होगा। भारत में मुंबई, कोलकाता, चेन्नई। दिल्ली आदि तथा अमेरिका, यूरोप के बड़े शहर एवं सिंगापुर जैसा छोटा देश जिनमें इस प्रकार के 'यजमान समाज' दिखाई देते हैं। इन सब में बहुसंस्कृतिवाद के दर्शन होते हैं। इस बहुसंस्कृतिवाद के कुछ महत्वपूर्ण कारक या आयाम निम्नलिखित हैं-

बहुसंस्कृतिवाद के महत्वपूर्ण कारक या आयाम

(Factors of Multiculturalism)

बहुसंस्कृतिवाद की प्रक्रिया का विकास सभी कालों में विद्यमान रहा है। आरम्भ में इसकी गति बहुत धीमी थी, किन्तु वर्तमान समय में अनेक कारकों के परिणाम स्वरूप इसकी गति में महत्वपूर्ण तीव्रता आई है। इनमे प्रमुख निम्नलिखित है-

1. **प्रौद्योगिकी का विकास (Technological Development):** वैज्ञानिक जानकारी का उपयोग जब व्यवहार में किया जाता है तो उसे प्रौद्योगिकी कहते हैं। प्रौद्योगिकी की सहायता से मनुष्य ने प्रकृति के उपर अपना नियन्त्रण स्थापित किया है। भारत में उन्नति के फलस्वरूप यंत्रीकरण में बढ़ोत्तरी हुई है। उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रो में मानवीय शक्ति का स्थान मशीनों ने ले लिया है। प्रौद्योगिकी के कारण औद्योगिक व्यवस्था का विकास हुआ है। जिसके फलस्वरूप पुराने सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य प्रभावित हो रहे हैं और व्यवसाय के प्रति नये मूल्यों का विकास हो रहा है। भारत प्रौद्योगिकी के विकास का सर्वाधिक प्रभाव परिवार, धर्म, तथा राज्य आदि संस्थाओं पर पड़ रहा है।

2. **आर्थिक विकास (Economical Development) :** भारत में आर्थिक विकास के फलस्वरूप सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया बड़ी तीव्र गति से प्रभावित हुई है। यातायात के साधनों का विकास, आमदनी में वृद्धि, रोजगार के अवसर, शिक्षा के अवसर आदि ऐसे कारक हैं जिन्होंने परम्परागत सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों और सम्बन्धों के आधार को बदल दिया है। व्यवसाय के आधार पर समाज में सबको समान समझा जाने लगा है। उच्चता का एकमात्र मापदंड व्यवसाय सम्बन्धी

सफलता को माना जाने लगा है। जिसके परिणाम स्वरूप समाज में 'बहुसंस्कृतिवाद' एकात्मता का स्वरूप लेने लगी है।

3. संस्कृतिकरण (Sanskritization): बहुसंस्कृतिवाद के परिणाम स्वरूप समाज में अनेक परिवर्तन हुए हैं। निम्न समझी जानेवाली जातियां उच्च जातियों के संस्कारों, प्रथाओं और परम्पराओं का अनुकरण कर रही है। इतना ही नहीं इन प्रथा परम्पराओं के वैज्ञानिक कारणों को भी समझने का प्रयत्न कर रही है। इसीलिए संस्कृतिकरण का अभिप्राय केवल नई प्रथाओं और परम्पराओं तथा आदतों को अपनाना ही नहीं है बल्कि उन विचारों और मूल्यों को दर्शाना भी है जो किसी सामजिक संस्कृति को प्रभावित करते हैं। इनका समर्थन और विरोध भी 'बहुसंस्कृतिवाद' को जन्म देता है।

4. पश्चिमीकरण(Westernization): पाश्चात्य देशों के साथ सम्पर्क के कारण पूरी दुनिया के लोग अपनी विचारधारा, वेश-भूषा तथा रीती-रिवाजों को त्याग रहे हैं और पश्चिमी विचारधारा व संस्कृति को अपना रहे हैं। जिसके फलस्वरूप भारतीय समाज एवं संस्कृति के अंदर अनेक परिवर्तन हुए हैं। नई प्रौद्योगिकी, ज्ञान, विश्वास तथा संचार क्रान्ति के कारण सांस्कृतिक एकीकरण हुआ है, जो 'बहुसंस्कृतिवाद' ही है।

5. नगरीकरण(Urbanization): औद्योगिक विकास के कारण नगरों का निरंतर विकास हो रहा है। इसलिए ग्रामीण जनता रोजगार के लिए नगरों, महानगरों और विदेशों में रोजगार के लिए स्थलांतरित हो रही है। इसके विपरीत नगरीय आचार-विचार,रहन-सहन अथवा संस्कृति का ग्रामीण जीवन व संस्कृति पर प्रभाव पड़ रहा है। वैयक्तिकीकरण, सामाजिक गतिशीलता, जीवन के प्रति नया दृष्टि कोण, नये मूल्य एवं प्रतिस्पर्धा के कारण संस्कृति का समर्थन व विरोध दृष्टिगोचर हो रहा है। जिसे हम आधुनिक संस्कृति भी कह रहे हैं। यह आधुनिक संस्कृति अपने मिली-जुली संस्कृतियों का ही रूप है जिसे हम 'बहुसंस्कृतिवाद' भी कह सकते हैं।

6. लोकतन्त्रीय चेतना का विकास (Development Of Democratic will): स्वतंत्रता के पश्चात भारत में प्रजातंत्र की स्थापना हुई। जिसके फलस्वरूप भारत में लोकतन्त्रीय चेतना का विकास का विकास हुआ। प्रत्येक जाति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग के सदस्यों को समानता का अधिकार प्राप्त हुआ। परिणाम स्वरूप समानता की भावना का विकास हुआ है। धर्म निरपेक्ष भावना का विकास हुआ है। भारत में स्थित सभी धर्मों को समानता से देखा जाता है। इस व्यवस्था के कारण सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं। जैसे हिंदू विवाह अधिनियम, स्त्री शिक्षा अधिनियम, जाति सम्बन्धी

अधिनियम आदि के कारण सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं। जिससे पिछड़े वर्गों का उत्थान हुआ है।

7. यातायात और संचार माध्यमों का विकास(Development Of Transport & Communication): आधुनिक युग में यातायात और संचार माध्यमों का सर्वाधिक विकास हुआ है। संचार माध्यमों में मीडिया ने संचार के नये-नये और प्रगत माध्यम समाज को दिए हैं। जिसके फलस्वरूप समाज में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। यातायात और संचार माध्यमों के विकास से विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों का पारस्परिक सम्पर्क बढ़ गया है। जिससे विविध संस्कृतियों का अनुकरण, प्रचार एवं बाजारीकरण तीव्र गति से हो रहा है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय जीवन और संस्कृति में अनेक प्रकार की विविधता विद्यमान है यह भी प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या भारतीय या अन्य संस्कृतियों का संश्लेषण सम्भव है? यह भारत की विविधता पर नजर डालें तो लगता है कि संश्लेषण का कार्य कठिन है। किन्तु यथार्थ में सांस्कृतिक संश्लेषण सम्भव है और होता आया है। यही 'बहुसांस्कृतिकवाद' आज जिसे हम भारतीय संस्कृति या 'बहुसांस्कृतिकवाद' कहते हैं उसके विकास में विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र, जातियों, धर्मों, सम्प्रदायों का योगदान है। आर्य, अनार्य, ग्रीक, हूण, पारसी, आदि सभी बहुसांस्कृतिक तत्व यहाँ विद्यमान है। संक्षेप में संश्लेषण ही भारतीय संस्कृति की वह शक्ति है जिसने इतिहास के उतार-चढ़ाव को झेला है। भारत में अनेक धर्मों व सम्प्रदायों का विकास हुआ है। समय-समय पर विभिन्न प्रजातियों और संस्कृतियों का आगमन हुआ किन्तु काल के प्रभाव के साथ सभी भारतीय संस्कृति में समा गयी। इस प्रकार भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही संस्कृति का संश्लेषण होता आया है। आज भी संश्लेषण की यह प्रकिया विद्यमान है। जिसने 'बहुसांस्कृतिकवाद' का रूप ले लिया है।

मीडिया (Media)

मीडिया शब्द संचार माध्यमों के लिए प्रयुक्त होता है। इसी प्रकार जनसंचार प्रचलित शब्द है। जैसे-समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि। यद्यपि इंटरनेट जैसे नये माध्यमों के उद्भव और तीव्र विकास के कारण मीडिया के पारम्परिक के सवरुप में परिवर्तन आया है। नये माध्यम जन माध्यम बन रहे हैं। नए प्रौद्योगिकी के प्रभाव से सामजिक सांस्कृतिक विकास की प्रक्रिया में निरंतर परिवर्तन आ रहा है। मीडिया के प्रचार के कारण सामाजिक इच्छाओं, आकांक्षाओं, आदतों और मानवीय व्यवहारों को बदल दिया है। जिससे सामजिक सांस्कृतिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। मीडिया एक बड़े उद्योग के

रूप में उभरा है। जिसने बाजार को अपने कब्जे में ले लिया है। आर्थिक क्षेत्र में मीडिया की सार्थकता निरंतर बढ़ रही है। मीडिया के इस बहुआयामी भूमिका के कारण इसके नियमन और सैद्धांतिकरण के सदैव प्रयत्न होते रहे हैं। आज समाज से सम्बन्धित कोई भी विषय ऐसा नहीं है जिसमे मीडिया का हस्तक्षेप नहीं है। इसलिए मीडिया की सामाजिक, सांस्कृतिक प्रासंगिकता और समाज के साथ उसके सम्बन्धों को लेकर हमारे मन में अनेक प्रश्न निर्माण होते हैं जैसे – निष्पक्षता, हिंसा, जीवन मूल्य, सेक्स, देहवाद, विज्ञापनों का अतिरेक, उपभोक्तावाद आदि। ये सभी प्रश्न भारतीय समाज को ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के समाज को प्रभावित कर रहे हैं।

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है। किसी भी लोकतान्त्रिक देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की स्तिथि की जांच भी मीडिया की स्वतंत्रता के आधार पर ही की जाती है। वैसे भी मीडिया के सरोकारों का दायरा बहुत विस्तृत है। मीडिया के सरोकारों व उद्देश्यों की चर्चा सर्वत्र की जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि मीडिया की भूमिका समाज को सूचना देना, शिक्षित करना और मनोरंजन करना(To inform, To Educate and To Entertain) है। इसमें मीडिया के सभी पक्ष समाहित है। लेकिन इन तीनों की विवेचना समय के साथ आवश्यक है। इससे ही मीडिया को समझने में मदद मिल सकेगी। मीडिया जब स्वार्थ से प्रेरित होगा तो जनसरोकारों पर इसका प्रभाव पड़ेगा। ये सरोकार सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण में परिवर्तन लाते हैं।

मनोरंजन के क्षेत्र में मीडिया ने सभी पारम्परिक एवं सांस्कृतिक साधनों को विस्थापित कर दिया है। भूमंडलीकरण एवं उदारीकरण के इस दौर में आर्थिक सुधारों के साथ ही अधिक सूचना, अधिक मनोरंजन, अधिक संगीत और अधिक फ़िल्में इन सबकी मांग अचानक बढ़ गयी है। सैटेलाईट के आगमन के कारण सैकड़ों चैनल टी.आर.पी. की दौड़ में शामिल हो चुके हैं। जिनका मुख्य उद्देश्य केवल नफा कमाना है। चैनलों और कार्यक्रमों की विभिन्नता ने दर्शकों की पसंद को बदल दिया है, उसमें श्रेणियां बनने लगी हैं। उदारीकरण और मीडिया ने पूरे विश्व में अपना रंग दिखाया है। शॉपिंग मॉल्स, मल्टीप्लेक्स, बहुराष्ट्रीय कम्पनियां, क्रेडिटकार्ड व आसान ऋण सुविधाओं के कारण लोगों की जीवन शैली बदल गयी है इतना ही नहीं प्रवृत्तियां व आकांक्षायें भी बदल गयी है। अर्थात सांस्कृतिक सपाटिकरण हो रहा है। इसके अलावा भारत में अब तक वर्जित माने जाने वाले विषयों को भी मीडिया ने छेड़ा है। सेक्स और विवाहेत्तर सम्बन्धो पर चैट शो आयोजित होने लगे हैं। पारम्परिक जीवन शैली के बदलाव को प्रेरित करने वाले कार्यक्रमों की तादात बढने लगी है। भ्रमण, बाहरी खान-पान, फैशन और दिखावा मीडिया की विषय वस्तु का मुख्य भाग बन गया है। फैशन डिजाइन और मॉडलों को प्रदर्शित करनेवाले कार्यक्रमों व

दर्शकों की संख्या बढ़ रही है और जनता से जुड़े प्रश्नों व मुदों को गौण समझा जाने लगा है। मनोरंजन एवं लाभ को प्राथमिकता दी जा रही है। चमक-दमक और ब्रांड को लोकप्रिय बनाकर मीडिया सांस्कृतिक विरासतों को व्यवसाय के माध्यम से बाजार का रूप दे रहा है। रियलिटी शो, गेम शो, इंडियन आयडियल, कौन बनेगा करोड़पति जैसे अनगिनत शोज आज प्रसारित हो रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से सामजिक भावनाओं और आकांक्षाओं से खेल कर मुनाफा कमाया जा रहा है। इस मुनाफे को विज्ञापन उद्योग निरंतर बढ़ा रहा है। विज्ञापन उद्योग भ्रामक यथार्थ को दर्शाकर समाज और संस्कृति को प्रभावित कर रहा है। दर्शकों में उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों के विकास की दृष्टि से टेलीविजन धारावाहिकों का निर्माण भारत में मनोरंजन जगत की अभूतपूर्व घटना है। यह आर्थिक से ज्यादा सांस्कृतिक है। वर्तमान भारतीय टेलीविजन के मुख्य धारावाहिकों की सामान्य विशेषताओं को देखा जाय तो सुंदर कपड़ों, गहनों से लकदक महिलाएं, भावनाओं के प्रतिरूपण में पात्रों के स्लोमोशन भंगिमाएं, अवैध सम्बन्धों का विरोध एवं समर्थन, शोक या उत्सव का सजावटी प्रदर्शन, देवी-देवताओं की पूजा, यज्ञ, हवन का अतियथार्थ रूप देखने को मिलता है। जिसके कारण धर्म भीरू महिलाएं व पुरुष इसका अंधानुकरण करते नजर आते हैं। भारतीय सांस्कृति से जुड़े कुछ तीज-त्यौहार, उत्सवों ने आज बाजार का रूप ले लिया है। जैसे - करवा-चौथ, नवरात्री, होली, गणेशोत्सव, दुर्गा पूजा, लोहड़ी, पोंगल, क्रिसमस आदि।

भारत में आधुनिक मीडिया ने सामजिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक चेतना का विकास किया है। परन्तु सामजिक रूढ़ियों अंधविश्वासों, धार्मिक कट्टरता, ज्योतिष, भविष्यवाणीयां, भूत-प्रेतों की सत्य कथा, पाप-पुण्य, पुनर्जन्म, धर्मगुरुओं के प्रवचन व उपदेश, तंत्र-मन्त्र, व्रत और भाग्यफल आदि सभी आज के मीडिया के अभिन्न अंग हैं। इन सबका उपयोग रूढ़ियों और अंधविश्वासों के प्रसार के लिए हो रहा है। इससे यह पता चलता है कि मीडिया के लिए अभिव्यक्ति स्वतंत्रता का अर्थ लोगों को मूर्ख बनाने की छूट है। तर्क यह है कि धार्मिक विश्वास और आस्था लोगों की भावनाओं से जुड़ा मुद्दा है। इसलिए यह बहस नहीं हो सकती। लेकिन यह मुद्दा बाजार में अधिकतम मुनाफा कमाने के लिए उपयोग किया जा रहा है। इस सन्दर्भ में कार्ल मार्क्स ने कहा है-"विज्ञान जब तक पूंजीवाद के अधिपत्य से मुक्त नहीं होगा, तब तक मानव के दमन और शोषण का यंत्र बना रहेगा।" मीडिया केवल उपभोक्ता पर ही दुष्प्रभाव नहीं डाल रहा है बल्कि हामरी अभिव्यक्ति की काल्पनिकता और लाक्षणिकता को भी दुष्प्रभावित कर रहा है। उसने सब कुछ अपने उपभोक्तावादी निर्दयी भुजपाश में समेट लिया है। यहाँ वही सफल है जो सर्वाधिक लोकप्रिय और बिकाऊ है।

वर्तमान समय में भारत में में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व मीडिया हिंसा, अपराध, भ्रष्टाचार, हिंसा, अपराध, आतंकवाद और राजनितिक सूचनाओं का जखीरा बन गया है। जिसमें कला, साहित्य, संस्कृति को जगह नहीं रह गयी है। राजनितिक हलचलों का भ्रष्ट अराजक, और दोगले चरित्रों को तलाशने और उभारने में पूरी ताकत से विश्व मीडिया जुड़ा हुआ है। लेकिन इससे दुनिया को क्या मिलेगा? समाज क्या सीखेगा? अपनी हिंसात्मक और वारदाती सूचनाओं के कारण विश्व मिडिया सिर्फ़ क्रूर और निर्दयीही नहीं बल्कि अविश्वसनीय और असंवेदनशील भी हो गया है। यद्यपि वर्तमान समय में मीडिया भूमंडलीकरण और वसुधैव- कुटुम्बकम के निर्माण में एक हद तक आधारभूत भूमिका भी निभा रहा है परन्तु सभ्यता और संस्कृति के संवर्धन के लिया इतना पर्याप्त नहीं है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि, मीडिया क्रान्ति से विश्व की सृष्टि और संस्कृति कुछ हद तक खतरे में है। अत: उसे अपने रास्ते और रुख बदलने होंगे, नजरिये पर नजर पैदा करनी होगी। उसे मानव संस्कृति का या बहुसांस्कृतिकवाद की शक्तियों से जुड़ना होगा। उसे सत्याग्रही और बहुसांस्कृतिकवाद का पोषक बनना होगा, तभी मीडिया बहुसांस्कृतिकवाद का रक्षक और संरक्षक बन सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ ;

1. हिंदी साहित्य कोष भाग-१ सं।डॉ।धीरेन्द्र वर्मा
2. कृतिका अर्धवार्षिकी –जनवरी-दिसम्बर (संयुक्तांक 11-12)
3. भारत में सामजिक स्तरीकरण-परशुराम शुक्ल
4. सामाजिक परिवर्तन एवं नियंत्रण –ज्योति वर्मा
5. मीडिया के साजिक सरोकार – कालू राम परिहार
6. विश्व मीडिया – डॉ।विष्णु पंकज
7. बहुवचन (त्रैमासिक) जुलाई-सितम्बर 2013
8. बहुवचन (त्रैमासिक) मीडिया विशेषांक –अप्रैल-जून 2016
9. मीडिया विमर्श (Indian Media-Vision-2020)जून 2015